10

''जो असली यहूदी है, क्या वह खड़ा होगा?''

(2:17-29)

हम पौलुस के यहूदियों पर दोष लगाने के साथ आगे बढ़ रहे हैं। इस बार हमारा वचन पाठ रोमियों 2:17-29 है। ''निश्चय ही, आप मुझे नहीं कह सकते!'' पाठ में हमने 17 से 24 आयतों का अध्ययन किया, परन्तु अगली आयतों की समीक्षा करने से पहले हमें उन आयतों पर फिर से विचार करना आवश्यक है।

पूरे वचन पाठ में पौलुस ने ज़ोर दिया कि यहूदी को कौन सी बात यहूदी बनाती है। ये आयतें इन शब्दों के साथ समाप्त होती हैं:

> ''क्योंकि वह यहूदी नहीं, जो प्रकट में यहूदी है; और न वह खतना है, जो प्रकट में है, और देह में है। पर यहूदी वही है, जो मन में है; और खतना नहीं है, जो हृदय का और आत्मा में है; न कि लेख का: ऐसे की प्रशंसा मनुष्यों की ओर से नहीं, परन्तु परमेश्वर की ओर से होती है'' (आयतें 28, 29)।

इन आयतों के विभिन्न अनुवादों को पढ़ने पर मैं दंग रह गया कि कितनों ने ''असली यहूदी'' (देखें RSV; CEV; AB[1]; TEV; बार्कले; LB) या सच्चा यहूदी (देखें NEV; NCV; फिलिप्स) वाक्यांश का इस्तेमाल किया है। उदाहरण के लिए CJB में 28 और 29 आयतों को इस प्रकार लिखा गया है:

> क्योंकि *असली यहूदी* केवल बाहर से दिखने वाला यहूदी नहीं है: सच्चा खतना केवल बाहरी और शारीरिक नहीं है। इसके विपरीत, *असली यहूदी* अंदरूनी है; और सच्चा खतना हृदय का अर्थात आत्मिक है न कि शाब्दिक; ताकि उसकी महिमा दूसरे लोग नहीं बल्कि परमेश्वर करे।

''असली यहूदी'' वाक्यांश पर विचार करते हुए मेरा ध्यान पचास और साठ के दशकों में अमेरिकी टेलीविज़न में चलने वाले कार्यक्रम ''टू टेल द ट्रुथ'' की ओर चला गया। तीन प्रतियोगियों को एक पैनल के सामने खड़ा किया जाता है। पहला कहता, ''मेरा नाम [हम उसे जो-स्मिथ] कहेंगे और मैंने [कुछ असामान्य या विशेष किया है]।'' दूसरे और तीसरे प्रार्थी भी जो-स्मिथ होने का दावा करते हैं। उनके बैठ जाने के बाद पैनल उन से प्रश्न पूछता और अनुमान लगाता कि कौन सच बोल रहा है और कौन नहीं। अन्त में, मेज़बान कहता, ''क्या असली जो-स्मिथ खड़ा हो

जाएगा'' और जो-स्मिथ अपने पांवों पर खड़ा हो जाता।

कालांतर के इन तीन लोगों की कल्पना करें। सब ने पौलुस के समय के यहूदियों का विशेष लिबास पहना है और सब के नैन नक्श वैसे ही हैं। पहला कहता है, ''मैं असली यहूदी हूं। मेरे पास मूसा की व्यवस्था है।'' दूसरा कहता है, ''मैं असली यहूदी हूं। मेरे पास मूसा की व्यवस्था है और मेरा खतना हुआ है।'' तीसरा कहता है, ''मैं असली यहूदी हूं। मेरे पास मूसा की व्यवस्था है, मेरा खतना हुआ है *और* मैं मन से परमेश्वर को समर्पित हूं।'' *जो असली यहूदी है क्या वह खड़ा होगा?*

व्यवस्था पाने से कोई ''असली यहूदी'' नहीं बन जाता (2:17-24)

शारीरिक इस्राएल

उन सब बातों ने जिनसे उनके यहूदी होने का पता चलता था, अधिकतर यहूदी दो को सबसे ऊपर रखते थे। पहला यह तथ्य था कि परमेश्वर ने उन्हें मूसा की व्यवस्था दी थी (देखें 3:1, 2)। रोमियों 2:17-24 बताता है कि यहूदी लोग व्यवस्था के विषय में कैसा महसूस करते थे। वे ''व्यवस्था पर भरोसा'' रखते थे (आयत 17)। उन्हें ''व्यवस्था की शिक्षा'' दी जाती थी (आयत 18)। उनका मानना था कि ''ज्ञान और सत्य का नमूना जो व्यवस्था में है'' उनके पास है (आयत 20)। इस प्रकार वे ''व्यवस्था के विषय में'' घमण्ड करते थे (आयत 23)। NCV में है, ''तुम परमेश्वर की व्यवस्था होने की शेखी मारते हो।''

यहूदियों में एक कहानी थी कि परमेश्वर सत्तर जातियों के पास गया और उन्हें व्यवस्था देने की पेशकश की, परन्तु सब ने इनकार कर दिया। अन्त में वह एक छोटे से समूह के पास गया जिसे इस्राएली कहा जाता था। जब उसने उन्हें व्यवस्था देने की पेशकश की, तो उन्होंने कहा, ''हम इसे लेंगे!'' यह कहानी पूरी तरह से आविष्कार है, परन्तु यह बताती है कि व्यवस्था होने के लिए यहूदी लोग कैसा महसूस करते थे। व्यवस्था के रक्षक होने से वे विशेष बन गए! कहानी के अनुसार केवल वही इतने समझदार थे, जिन्होंने उसके मूल्य को पहचाना!

अफ़सोस की बात है कि कुछ यहूदियों को लगा कि व्यवस्था का *होना* ही काफी था। उनके पास व्यवस्था थी परन्तु वे इसे रख (आज्ञा मानना) नहीं पाए। आयत 13 में पौलुस ने कहा कि ''परमेश्वर के यहां व्यवस्था के *सुनने वाले* धर्मी नहीं पर व्यवस्था पर *चलने वाले* धर्मी ठहराए जाएंगे।'' अब आयत 23 में उसने कहा, ''तू जो व्यवस्था के विषय में घमण्ड करता है, क्या व्यवस्था न मानकर परमेश्वर का अनादर करता है?'' यह एक वाक्पटु प्रश्न है जिसका उत्तर जिसका उत्तर उसी में है, ''हां, तू व्यवस्था को तोड़कर परमेश्वर का अपमान कर रहा है।''

अपने काल्पिक गेम शो में जब हम कहते हैं कि ''क्या जो असली यहूदी है वह खड़ा होगा?'' तो पहला प्रतियोगी बैठा रहता है। व्यवस्था के *होने से* वह ''असली यहूदी'' नहीं बन गया।

आत्मिक इस्राएल

पौलुस की टिप्पणियां शारीरिक यहूदियों के लिए थीं, परन्तु इन्हें हमारे लिए प्रासंगिक बनाना उपयुक्त होगा। अध्याय 4 में पौलुस ने कहा कि जिनका विश्वास अब्राहम के विश्वास वाला है चाहे

वे यहूदी हों या अन्यजाति वे अब्राहम की आत्मिक संतान हैं (आयतें 12, 16; देखें गलातियों 3:29)। गलातियों के नाम अपने पत्र में पौलुस ने मसीही लोगों को ''परमेश्वर का इस्राएल'' बताया (6:15, 16)।

आत्मिक इस्राएल के रूप में हम अब मूसा की व्यवस्था से बंधे नहीं रहे (देखें रोमियों 7:4)। परन्तु हमारे पास भी ''मसीह की व्यवस्था'' है (1 कुरिन्थियों 9:21), ''स्वतन्त्रता की सिद्ध व्यवस्था'' (याकूब 1:25)। (यदि हमारे पास कोई व्यवस्था *न* होती तो हम पापियों के रूप में दोषी नहीं ठहराए जा सकते थे [देखें रोमियों 4:15; 5:13ख]।) विशेषकर परमेश्वर ने हमें सिखाने के लिए, हमें समझाने के लिए, हमारी ताड़ना के लिए और हमें तैयार करने के लिए (देखें 2 तीमुथियुस 3:16, 17) यीशु का नया नियम (वाचा) दी है (देखें इब्रानियों 9:15-17)। यह टिप्पणी बड़ी आशीष रखती है! जॉन फॉसेट ने लिखा है:

> परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई
> ईश्वरीय पुस्तक कितनी बहुमूल्य है!
> अपने चमकते नियमों के प्रकाश की तरह चमकती,
> स्वर्ग में मेरे काम को ले जाने में अगुआई करने के लिए
> ईश्वरीय पवित्र पुस्तक!
> बहुमूल्य खज़ाना मेरा है!
> मेरे कदमों के लिए रौशनी और मेरे मार्ग के लिए ज्योति
> मुझे सुरक्षित घर जाने में अगुआई देने के लिए।[2]

परन्तु केवल बाइबल अपने पास रखना,[3] पर इसके नियमों की उपेक्षा करना व्यर्थ है। उससे भी बुरा, यह बेतुका है। यह जंगल में खोए एक आदमी की तरह है जिसके पास डिकसूचक तो है पर वह उसे देखता नहीं है। ... या ऐसे आदमी की तरह या ऐसे आदमी की तरह जो अनजान इलाके में अपनी जेब में नक्शा लेकर घूमता है पर इसमें से देखता कभी नहीं ... या दिशा की ओर संकेत करते स्तम्भ के पास खड़े यात्री की तरह है, जो उस स्तम्भ से आगे बढ़ने से इनकार करता है। केवल मूसा की व्यवस्था होना ही किसी को असली यहूदी नहीं बना देता और केवल नये नियम के पास होने से कोई असली मसीही नहीं बन जाता।

केवल खतना होना किसी को ''असली यहूदी'' नहीं बना देता (2:25-27)

शारीरिक इस्राएल

किसी यहूदी के लिए उसके यहूदी होने की दूसरी सबसे महत्वपूर्ण बात खतना था। खतना इस्राएल की राष्ट्रीय पहचान थी और हर यहूदी नर के लिए आवश्यक थी। अध्याय 2 के शेष भाग में पौलुस खतने के विषय में लौट आया।

''खतना'' एक मिश्रित शब्द (*peritome*) से लिया गया है, जो ''गिर्द'' (*peri*) के अर्थ

वाले उपसर्ग के साथ "काटना" (*temno*[4]) के लिए शब्द को मिलाता है। इसका मूल अर्थ "गोल काटना" है।[5] खतना के लिए अंग्रेज़ी शब्द "circumcision" लातीनी शब्द से लिया गया है और इसका अर्थ वही (circum ["गिर्द"] के साथ cise ["काटना"]) है। यूनानी और अंग्रेज़ी दोनों में इस शब्द को खलड़ी उतारने के सर्जिकल ढंग के लिए है (देखें उत्पत्ति 17:11; निर्गमन 4:25)।

यहूदी माता-पिता अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा के बारे में अपने बच्चों को बताने से कभी थकते नहीं थे:

> फिर परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, "तू भी मेरे साथ बान्धी हुई वाचा का पालन करना; तू और तेरे पश्चात् तेरा वंश भी अपनी-अपनी पीढ़ी में उसका पालन करे। मेरे साथ बान्धी हुई वाचा, जो तुझे और तेरे पश्चात् तेरे वंश को पालनी पड़ेगी, सो यह है, कि तुम में से एक-एक पुरुष का खतना हो। तुम अपनी अपनी खलड़ी का खतना करा लेना; जो वाचा मेरे और तुम्हारे बीच में है, उसका यही चिह्न होगा। पीढ़ी-पीढ़ी में ... सब पुरुष भी जब आठ दिन के हों जाएं, तब उनका खतना किया जाए" (उत्पत्ति 17:9-12)।

ध्यान दें कि खतना परमेश्वर और अब्राहम के बीच "वाचा का चिह्न" था। रोमियों 4:11 में पौलुस ने अब्राहम के बारे में ऐसी ही भाषा का इस्तेमाल किया: "उसने खतने का *चिह्न* पाया कि उस विश्वास की धार्मिकता पर *शाप* हो जाए जो उसने बिना खतने की दशा में रखा था।" इस्राएल में अब्राहम के समय से ही खतने की प्रथा मानी जाती थी। डग्लस मू के अनुसार, "मकाबी विरोध के समय के संकट (166-160 ई.पू.) में इसे महत्व का एक नया अवसर दे दिया"[6] यहूदी लोगों में। कई बार लड़कों का खतना डॉक्टरी कारणों से किया जाता है; परन्तु यहूदियों के लिए यह सम्मानित और अति श्रद्धेय और धार्मिक रीति बन गई [7]। खतना "मांस काटने की एक प्रथा है जो [यहूदी पुरुष को] यहूदी बनाती है," "जो परमेश्वर के होने का सबसे अंतरंग केन्द्र है" (2:25; MSG; फिलिप्प)। यहूदी लोग गर्व से अपने अपने आपको "खतना किए हुए" और अन्यजातियों को "खतना रहित" कहते थे (देखें 3:30)।

यहूदी दिमाग के खतने के महत्व को परमेश्वर की प्रेरणा रहित रब्बियों की बातों में देखा जाता था। "सब खतना पाए हुओं का भाग आने वाले संसार में"[8]; "खतना इस्राएल को गेहन्ना से निकालेगा"[9]; "खतना किया हुआ कोई यहूदी नरक को नहीं देखेगा।" ये सूचियां परमेश्वर की आज्ञा मानने या न मानने की चिंता को नहीं दिखाती; खतना किया होना ही प्रभु के साथ अनन्त जीवन पाने के लिए काफ़ी माना जाता था।

रोमियों 2:25-29 में पौलुस ने दिखाया कि कुछ रब्बियों की शिक्षा के विपरीत, केवल खतना किया होना किसी को असली यहूदी नहीं बना देता। उसने "तो खतने से लाभ तो है" (आयत 25ख) शब्दों से आरम्भ किया। परमेश्वर ने यहूदियों को विशेष आत्मिक लाभ देकर आशीष दी थी (देखें 3:1, 2) यहूदी होने के लिए खतना आवश्यक था इसलिए इसका लाभ था।

फिर पौलुस ने एक छोटा शब्द "यदि" जोड़ा: "*यदि* तू व्यवस्था पर चले" (आयत 25क)।[11] खतना कभी भी अपने आप में लक्ष्य होने के लिए नहीं दिया गया था। यह इस बात का चिह्न था कि किसी का वाचा में परमेश्वर के साथ सम्बन्ध है, परन्तु उसके बाद खतना किए हुए की ज़िम्मेदारी थी कि उस वाचा को पूरा करे (देखें गलातियों 5:3)। दुख की बात है कि यहूदी लोगों

ने खतने का इस्तेमाल आज्ञापालन के *विकल्प* के रूप में किया था।

खतना किए हुए द्वारा ''व्यवस्था पर चल'' न पाने से क्या होना था? पौलुस ने कहा, ''परन्तु यदि तू व्यवस्था को माने, तो तेरा खतना बिना खतना की दशा ठहरा'' (रोमियों 2:25ग)। किसी यहूदी के लिए यह शब्द कितने चौंकाने वाले होंगे क्योंकि ''खतना रहित'' होने की बात वे सोच भी नहीं सकते थे! बेशक पौलुस खलड़ी उतारने के विपरीत बात नहीं कर रहा था। बल्कि उसके कहने का अर्थ यह था कि यदि यहूदी लोग परमेश्वर के साथ अपनी वाचा को पूरा नहीं करते, तो वे ऐसे व्यवहार कर रहे थे *जैसे* उन्होंने वाचा का चिह्न कभी पाया ही नहीं (देखें NIV)। जबकि पुरुष अपनी दुल्हन के साथ विवाह की शपथ खाता है और फिर ऐसे व्यवहार करता है जैसे उसकी शादी ही न हुई हो तो यह निंदनीय है। जब कोई पुरुष किसी अनुबंध को पूरा न करने की मंशा से उस पर हस्ताक्षर करता है तो यह घृणायोग्य है। जब कोई प्रभु के साथ वाचा बांधकर उसको नज़रअंदाज करता है तो यह कितना अपमानजनक होगा!

यदि ''खतना किया हुआ'' ''खतना रहित'' बन सकता था तो सम्भावना थी कि ''खतना रहित'' को ''खतना किया हुआ'' के रूप में माना जाए। पौलुस ने आगे कहा, ''सो यदि खतनारहित मनुष्य व्यवस्था की विधियों को माना करे, तो क्या उसकी बिन खतना की दशा खतने के बराबर न गिनी जाएगी?'' (आयत 26)। ''खतना रहित मनुष्य'' का अनुवाद दो यूनानी शब्दों से किया गया है, जिसका अर्थ ''बिन खतना'' है (देखें KJV)। अंग्रेज़ी में हमें ''circumcision'' के लिए यूनानी शब्द में नकारात्मक पूर्वसर्ग (*a*) जोड़कर ''खतना रहित'' के लिए शब्द की उम्मीद होगी। इसके बजाय एक अलग शब्द का इस्तेमाल किया गया है, जो एक मिश्रित शब्द (*akrobustia*) है, जिसका अर्थ है ''खलड़ी [होना]।''[12]

पौलुस ने एक खतना रहित व्यक्ति के ''व्यवस्था की विधियों'' को *मानने* की बात की (आयत 26)। अनुवादित क्रिया ''मानता'' (phulasso) का अर्थ ''रक्षा करना,'' ''रखना ... सम्भालकर।''[13] यहां इसका अर्थ व्यवस्था को टूटने से बचाने के लिए ''रक्षा करना'' है, अन्य शब्दों में उसके नियमों को मानना।[14] ''विधियों'' *dikaiomata* अर्थात ''धर्म'' शब्दों के बहुआयामी परिवार से अनुवाद किया गया (आपने शब्द के आरम्भ में *dikai* को पहचान लिया होगा)। KJV में इस शब्द का अनुवाद ''धार्मिकता''; NKJV में ''धार्मिक शर्तें'' है।

कुछ आयतें पहले हमने पौलुस की बात देखी थी कि कुछ अन्यजाति ''व्यवस्था की बातों पर चलते'' थे (आयत 14)। उनके पास परमेश्वर की ओर से मिली लिखित व्यवस्था नहीं थी, पर उनके पास सही और गलत की समझ तथा मूसा की व्यवस्था में पाए जाने वाले नैतिक नियमों जैसे नियम माने जाते थे।

पौलुस ने यह साबित करने के लिए कि शारीरिक खतना अपने आप में काफ़ी नहीं था ऐसे व्यक्ति का हवाला दिया: ''सो यदि खतना रहित मनुष्य [स्वाभाविक रूप से] व्यवस्था की विधियों [चाहे उसके पास लिखित व्यवस्था नहीं है] को माना करे, तो क्या उस की बिन खतना की दशा खतने के बराबर न गिनी जाएगी?'' (आयत 26)। ''गिनी जाएगी'' का अनुवाद *logizomai* से किया गया है जिसका अर्थ है ''गिनना'' या ''हिसाब लगाना।''[15] हम देखेंगे कि अध्याय 4 में यह एक मुख्य शब्द है। NCV में ''यदि वे वही करते हैं जो व्यवस्था कहती है, तो यह ऐसा है *जैसे* वे खतना किए हुए हैं।''

जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने कहा कि पौलुस के दोहरे दावे से दो सरल समीकरणों के रूप में व्यक्त किया जा सकता है:[16]

खतना-आज्ञापालन=खतना रहित
खतना रहित+आज्ञापालन=खतना

फिर मैं कहता हूं कि किसी यहूदी के लिए यह अवधारणा कितनी चौंकाने वाली होगी। परन्तु पौलुस ने परेशान करने वाली आपनी बातें यहीं खतन नहीं की।

आयत 27 आरम्भ होती है, ''और जो मनुष्य शारीरिक रूप से[17] बिन खतना रहा यदि वह व्यवस्था को पूरा करे (आयत 27)। यहां एक अलग शब्द (telousa) का अनुवाद है। *telousa* का सम्बन्ध *telos* (''लक्ष्य'') से है और इसका अर्थ ''निर्धारित लक्ष्य तक लाने के लिए'' है। KJV में ''पूरा करना'' है। अन्यजाति वास्तव में मूसा की व्यवस्था की बात नहीं मानती थी (वह उनके पास थी ही नहीं); परन्तु वैसे ही नैतिकताओं के अनुसार जीवन बिताकर, वे व्यवस्था के उद्देश्यों में से एक को पूरा कर रही थी।

व्यवस्था की पालना करने वाले अन्यजातियों के बारे में पौलुस ने कहा, ''तो क्या तुझे [यहूदी को] जो लेख पाने[19] और खतना किए जाने पर भी व्यवस्था को माना नहीं करता है, दोषी न ठहराएगा?'' (आयत 27)। यहां एक और आश्चर्य है! यहूदी लोग अपने आपको अन्यजातियों के उपयुक्त न्याय करने वाले के रूप में मानते थे (देखें 2:1, 3), परन्तु पौलुस ने कहा कि सही काम करने वाले अन्यजाति लोग गलत काम करने वाले यहूदियों का न्याय krimo करेंगे! ''न्याय करने की बात तुलना करने के परोक्ष न्याय करने की है''[20] वैसे ही जैसे नीनवे के लोग उनका ''न्याय'' करेंगे जिन्होंने यीशु को ठुकराया (12:41)।

यदि अन्यजाति, जिनके पास लिखित विधान नहीं था, इसके कुछ नियमों को मान सकते थे, तो निश्चय ही यहूदी लोग जिनके पास लिखित रूप में व्यवस्था थी, वैसा ही करने के योग्य होना चाहिए था! मुझे एक नवयुवक की बात याद आती है जो उसे मिले काम के बारे में शिकायत करता है, ''यह तो बहुत कठिन है'' और उसका पिता उत्तर देता है, ''उस जवान को देख जो वहां है। वह तुझ से आधा है और वह उसे कर रहा है!'' कितना परेशान करने वाला है।

मुझे 25 से 29 आयतों पर आधारित कुछ गलत तर्कों को ठीक करने के लिए रुकना होगा। कई लेखक यह ज़ोर देते हैं कि इन आयतों में पौलुस का उद्देश्य यह सिखाना था कि खतना किसी काम का नहीं था। यानी खतना होने या न होने से कोई फर्क नहीं पड़ता था। यह सच है कि आज खतने का कोई आत्मिक महत्व नहीं है (1 कुरिन्थियों 7:19; गलातियों 5:6; 6:15), परन्तु याद रखें कि पौलुस की टिप्पणियों की पृष्ठभूमि मसीह के आने से पूर्व यहूदियों और अन्यजातियों के लिए परमेश्वर का प्रबन्ध था। उन प्रबन्धों के अधीन अन्यजाति लोगों के लिए खतना करवाना आवश्यक नहीं था, परन्तु यहूदी व्यक्ति के लिए खतना करवाना आवश्यक *था*। यदि यहूदी नर का खतना न हुआ हो तो वह फसह में भाग नहीं ले सकता था (देखें निर्गमन 12:48) या मन्दिर में नहीं जा सकता था (देखें यहेजकेल 44:9); वह ''अपने लोगों में से नष्ट किया'' जाना था (उत्पत्ति 17:14)। मोसेस ई. लार्ड ने लिखा:

... हम यहां अन्तर को नज़रअंदाज न करें। क्योंकि बिन खतने के यहूदी वैसा ही नहीं था जैसे बिन खतने के अन्यजाति। उस मामले में यहूदियों ने परमेश्वर की वाचा को तोड़ा था, पर अन्यजातियों ने ऐसे नहीं तोड़ा था। परन्तु यहूदी के खतना होने के बाद, जब तक वह व्यवस्था को मानता नहीं तब तक उसके खतने का कोई लाभ नहीं था।[21]

पौलुस की शिक्षा को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है: वाचा के ''चिह्न'' के बिना जो वाचा को *मानता* था आत्मिक रूप में उससे बेहतर स्थिति में था जिसके पास वाचा का ''चिह्न'' था पर उसे मानता *नहीं* था। क्या यह इस सच्चाई की बाइबली उदाहरण के लिए सहायक होगा? अन्यजाति सिपाही कुरनेलियुस पर विचार करें (प्रेरितों 10:1, 2), जिसमें खतने का ''चिह्न'' नहीं था। उसके व्यवहार की तुलना यहूदी महायाजक कैफा से करें (मत्ती 26:3, 4, 57, 62-68) जिसमें खतने का चिह्न था।

एक बार फिर हम अपने काल्पनिक गेमशो में वापस जाते हैं। जब मेज़बान कहता है, ''जो असली यहूदी है क्या वह खड़ा होगा?'' तो दूसरा प्रतियोगी (जिसने कहा था, ''मेरे पास व्यवस्था है, और मेरा खतना हुआ है'') भी बैठा रहता है। केवल व्यवस्था होना और खतना किया हुआ होना ही किसी को असली यहूदी नहीं बना देता था।

आत्मिक इस्राएल

फिर हम आत्मिक इस्राएल के रूप में यहूदियों की बातों से सबक ले सकते हैं। यहूदियों को लगता था कि कुछ कर्मकांडों को करने से वे परमेश्वर के सामने सही ठहर जाएंगे। क्या व्यवस्था का महत्व था? हां बिल्कुल था (देखें रोमियों 3:1, 3)। क्या यहूदी नर का खतना होना चाहिए था? बेशक। इनमें से दोनों में किसी के बिना वह यहूदी नहीं होना था। परन्तु क्या व्यवस्था के होने और परमेश्वर की आज्ञा मानने के विकल्प के लिए खतना हो सकता था? कभी नहीं! हम में से वे लोग नये नियम की मसीहियत की बहाली के लिए समर्पित हैं वे पापों की क्षमा के लिए ज़िम्मेदार लोगों को डुबोकर बपतिस्मा देते हैं। हम हर सप्ताह के पहले दिन प्रभु भोज में भाग लेते हैं। परमेश्वर की आराधना करते हुए हम संगीत के वाध्य यंत्रों के बिना गाते हैं। क्या ये सब बातें आवश्यक हैं? इसके विपरीत करके हम प्रभु की कलीसिया होने का दावा कैसे कर सकते हैं? क्या प्रभु की अन्य आज्ञाएं मानने के ये विकल्प हो सकते हैं जैसे नीचे दी गईं आज्ञाएं?

हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें (1 यूहन्ना 4:7)।

इसलिए जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें (गलातियों 6:10)।

और एक-दूसरे पर कृपाल, और करुणामय हों, और ... एक दूसरे के अपराध क्षमा करो, (इफिसियों 4:32)।

और उस की इच्छा जानता और व्यवस्था की शिक्षा पाकर उत्तम-उत्तम बातों को प्रिय

जानता है (रामियों 2:18)।

इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ (मत्ती 28:19)।

कभी नहीं! ''सच्चा मसीही'' बनने के लिए प्रभु की हर आज्ञा को मानने में गम्भीर होना आवश्यक है।

दिल से परमेश्वर को समर्पित ''असली यहूदी'' बनता था (2:28, 29)

पौलुस की सुधारवादी बातें उस ओर ले जा रही थीं जिसे बहुत से यहूदियों में ''यहूदी'' की पुन: परिभाषा माना, रोमियों 2:28 आरम्भ होता है, ''क्योंकि वह यहूदी नहीं, जो प्रकट में यहूदी है'' (आयत 28)। ''प्रकट में'' का अनुवाद तीन शब्दों (*en to phaneo*) से किया गया है जिसका अर्थ ''खुले में'' है यानी जिसे देखा जा सकता है। AB में ''बाहरी और सार्वजनिक'' है जबकि मैकॉर्ड के अनुवाद में ''दिखाई देने वाला'' है। यह रीतियों और संस्कारों तथा अन्य बाहरी अभिव्यक्तियों के विषय में है, जो हर यहूदी को प्रिय थे। ''और न वह खतना है, जो प्रगट में है, और देह में है''[22] (आयत 28)। ''प्रकट'' उन्हीं यूनानी शब्दों से लिया गया है। NIV में ''जो प्रकट में है और देह में है'' के बजाय ''बाहरी और शारीरिक'' है।

यदि बाहरी अभिव्यक्तियों से यहूदी को यहूदी नहीं कहा जा सकता तो यहूदी कैसे कहला सकता है? पौलुस ने कहा, ''पर यहूदी वही है, जो मन में है ...'' (आयत 29)। ''मन में'' का अनुवाद भी तीन शब्दों (en to krupto) से किया गया है। इन शब्दों का अर्थ है ''गुप्त में'' अर्थात जिसे देखा नहीं जा सकता।[23] मेकॉर्ड ने ''अदृश्य'' कहा।

पौलुस ने आगे कहा, ''और खतना नहीं है, जो हृदय का और आत्मा में है'' (आयत 29)। यह दावा ऐसा नहीं था जिसे यहूदियों ने पहले सुना न हो। पुराने नियम के लेखक ''हृदय के खतने'' के महत्व पर ज़ोर देते थे (देखें व्यवस्थाविवरण 30:6; लैव्यव्यवस्था 26:41; यिर्मयाह 9:25, 26; यहेजकेल 44:7, 9)। मूसा ने इस्राएलियों को आज्ञा दी थी, ''इसलिए अपने-अपने हृदय का खतना करो, और आगे को हटीले न रहो'' (व्यवस्थाविवरण 10:16)। यिर्मयाह ने परमेश्वर की ओर से यह संदेश दिया था। ''हे यहूदा के लोगो और यरूशलेम के निवासियो, यहोवा के लिये अपना खतना करो; हां, अपने मन का खतना करो; नहीं तो तुम्हारे बुरे कामों के कारण मेरा क्रोध आग की नाईं भड़केगा, और ऐसा होगा कि कोई उसे बुझा न सकेगा'' (यिर्मयाह 4:4)।

शारीरिक खतना खलड़ी उतारने के लिए ''आस पास को काटना'' था। आत्मिक खतना ''बाहर काटना'' अर्थात बुराई और विद्रोह को मन से निकालना था ताकि मनुष्य अपने प्रभु की महिमा करने के लिए समर्पित हो सके। शारीरिक खतने के लिए शारीरिक सर्जरी होती थी जबकि हृदय के खतने के लिए ''आत्मिक सर्जरी'' आवश्यक थी।

हृदय का यह खतना ''आत्मा में है न कि लेख का'' (रोमियों 2:29), ''लेख'' का अनुवाद उस शब्द से किया गया है जिसका अर्थ आयत 27 में ''व्यवस्था का लेख'' है। NIV में फिर ''लिखित कोड'' है। इस संदर्भ में यह मूसा की व्यवस्था के लिए है।

''लेख'' को ''आत्मा'' (pneuma[24]) से अलग किया जाता है। अंग्रेज़ी में आम तौर पर इस

बात की अनिश्चितता पाई जाती है कि आत्मा के लिए ''spirit'' में बड़ा ''S'' होना चाहिए या छोटा ''s.'' कई अनुवादों में इसे एक तरह से लिखा जाता है, जबकि दूसरे अनुवादों में दूसरी तरह। इस उलझन को KJV और उसके बाद के अनुवाद से समझाया जाता है: KJV में ''spirit'' छोटा है, जबकि NKJV में ''Spirit'' है।

यदि इस शब्द का आरम्भ छोटे ''s'' से हो तो RSV का विचार सम्भवतया सही है: ''असली खतना हृदय की बात है, जो *आत्मिक* है न कि शाब्दिक [यानी यह मांस काटने से ही नहीं होता]।''

यदि शब्द को बड़े ''S'' से लिखा जाए तो सम्भवतया पौलुस इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि हृदय का खतना मानवीय ऑपरेशन नहीं बल्कि ईश्वरीय ऑपरेशन है। (किसी यहूदी के लिए, ''आत्मा से'' का अर्थ ''परमेश्वर के आत्मा'' से हो। पवित्र आत्मा के रूप में प्रसिद्ध अलग ईश्वरीय व्यक्तित्व का विचार नये नियम की शिक्षा है न कि पुराने नियम की।[25]) यूजीन पीटर्सन ने इसे इस प्रकार व्यक्त किया: ''तुम्हारे हृदय पर परमेश्वर का चिह्न है, न कि तुम्हारी त्वचा पर चाकू का, जो यहूदी बनाता'' (MSG)।

लियोन मोरेस ने लिखा कि ''spirit'' को बड़े ''S'' से लिखा जाए या छोटे ''s'' से, ''दोनों तरह से अच्छा अर्थ मिलता है। और पौलुस अपनी बात जैसे भी बता रहा हो कि व्यवस्था की बाहरी शर्तों के लिए ठीक मेल खाना हो सकता है बात को पूरी तरह से न समझना है।''[26] यदि किसी यहूदी पुरुष का शरीर में खतना हुआ है पर उसके हृदय को छुआ न गया हो, तो उसका खतना व्यर्थ था।

पौलुस ने निष्कर्ष निकाला, ''ऐसे की प्रशंसा मनुष्यों की ओर से नहीं, परन्तु परमेश्वर की ओर से होती है'' (आयत 29)। मनुष्य उसकी प्रशंसा करते हैं, जिसे वे देख सकते हैं, परन्तु परमेश्वर उसकी प्रशंसा करता है जिसे देखा नहीं जा सकता अर्थात हृदय के खतने की (देखें 1 शमूएल 16:7)। जो लोग प्रभु से प्रेम करते हैं वे अपने जीवन, मनुष्य की स्वीकृति के लिए नहीं बल्कि परमेश्वर की स्वीकृति के लिए जीते हैं (रोमियों 2:29; फिलिप्प)।

कइयों का विचार है कि पौलुस ने आयत 29 के अन्त में शब्दों से खेल का इस्तेमाल किया। ''यहूदी'' नाम ''यहूदा'' से लिया गया था जिससे ''प्रशंसा'' का विचार निकला (देखें उत्पत्ति 29:35; 49:8)। इसलिए ''यहूदी'' का विचार ''प्रशंसा पाए हुए'' के रूप में हो सकता है। परन्तु जब तक ''प्रशंसा पाए हुए'' के हृदय का खतना नहीं होता तब तक वह केवल मनुष्यों की प्रशंसा पाता है न कि परमेश्वर की प्रशंसा।

हम अपने काल्पनिक गेम शो ''जो असली यहूदी है कृपया वह खड़ा होगा?'' में वापस आते हैं। जिसने कहा था, ''मेरे पास लूका की व्यवस्था है, मेरा खतना हुआ है, और मैं मन से परमेश्वर के लिए समर्पित हूं'' वह मुस्कुराते हुए अपनी सीट से उठता है। पौलुस के अनुसार *ऐसा* यहूदी ही *वास्तविक* यहूदी है।

आत्मिक इस्राएल

रोमियों 2:28, 29 के शब्द लिखते हुए पौलुस के मन में मुख्यतया शारीरिक यहूदी थे। एक

अर्थ में वह कह रहा था, ''तुम अपने आपको यहूदी कह सकते हो, पर *बाहर* से होने के साथ-साथ *अन्दर* से हुए बिना तुम *वास्तविक* यहूदी नहीं हो।'' परन्तु यह सम्भव है कि वह बाद की शिक्षा का पूर्वानुमान लगा रहा था कि मसीही लोग अब्राहम की *आत्मिक* संतान हैं (देखें 4:12, 16)। उदाहरण के लिए यदि आयत 29 में ''आत्मा'' पवित्र आत्मा को कहा गया है तो उसका अर्थ यहूदियों के बजाय मसीही लोगों के लिए अधिक होगा। इसके अलावा हम जानते हैं कि बाद के एक लेख में पौलुस ने मसीही लोगों को ''असली खतना'' किए हुए बताया (फिलिप्पियों 3:3; कुलुस्सियों 2:11)।[27]

पौलुस के मन में आत्मिक इस्राएल था या नहीं ''पर हम में से जो लोग मसीही हैं उन्हें वह सबक सीखने की आवश्यकता है जो उसने शारीरिक इस्राएल को सिखाया था: बाहरी रूपों को मानना कभी पापी नहीं है; *हृदय में* कुछ होना आवश्यक है। उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति पानी में डुबकी ले सकता है; यदि वह *हृदय से* आज्ञा नहीं मानता (रोमियों 6:17, 18; आयतें 3, 4) तो वह केवल भीगता ही है। कोई अखमीरी रोटी खाकर और दाख के रस में से पीकर प्रभु भोज में भाग ले सकता है, परन्तु यदि वह उन प्रतीकों के अर्थ पर ध्यान नहीं करता, तो वह ''इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है'' (1 कुरिन्थियों 11:29; देखें आयतें 23-30)। कोई व्यक्ति साज़ों के बिना भजन गा सकता है; परन्तु यदि वह ''आत्मा से ... और बुद्धि से भी'' नहीं गा पाता (1 कुरिन्थियों 14:15) तो वह केवल शोर मचा रहा है। हो सकता है कोई बहुत अच्छा बोलता हो, दिल से काम करता हो और बलिदानपूर्वक देता हो; परन्तु यदि वह इन कामों को मन में प्रेम के बिना करता है तो उसे इन से कुछ लाभ नहीं होगा (देखें 1 कुरिन्थियों 13:1-3)। ''वास्तविक मसीही'' बनने के लिए हमें न केवल *सही बातें* करनी आवश्यक हैं बल्कि उन्हें *सही ढंग से* करना भी आवश्यक है यानी हमें उन्हें हृदय से करना आवश्यक है।

ध्यान दें कि मैंने ''न केवल'' और ''भी'' कहा है। परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए बाहरी और भीतरी दोनों सही होने आवश्यक हैं। कई लोग यह सिखाने के लिए कि कोई ''बाहरी'' में सही है या नहीं इसका महत्व नहीं है रोमियों 2:28, 29 का गलत इस्तेमाल करते हैं; केवल ''भीतरी'' का ही महत्व है। उदाहरण के लिए कई लोग यह ज़ोर देते हैं कि रोमियों 2:28, 29 का मुख्य संदेश ''लेख बनाम आत्मा'' है। ये लोग यह निष्कर्ष निकालते हैं कि ''व्यवस्था का लेख'' (जो बाइबल वास्तव में कहती है) का कोई परिणाम नहीं है और केवल ''आत्मा की व्यवस्था'' (सही मंशा होना) ही महत्व रखता है। क्या पौलुस ने यह सिखाया कि पुराने नियम के प्रबन्ध के अधीन यहूदी हो या न उसके खतना होने का ''कोई परिणाम'' था? नहीं! इस बात को *समझा* जाता था कि यहूदी पुरुष का खतना होना आवश्यक है। पौलुस का उद्देश्य इस बात पर ज़ोर देना था कि *अकेला* शारीरिक खतना काफी नहीं था यानी यहूदी के हृदय का खतना *भी* आवश्यक था।

अन्य लोग रोमियों 2:28, 29 का इस्तेमाल परमेश्वर की योजना में बपतिस्मे के स्थान पर बाइबल की शिक्षा पर आक्रमण करने के रूप में करते हैं। इन आयतों में बपतिस्मे का कोई दोष नहीं है, इसलिए ऐसी प्रासंगिकता पर अपने आप संदेह होता है। यदि आप यह जानना चाहे हैं कि बाइबल किसी विषय पर क्या सिखाती है, तो उस विषय वाली आयतों को देखें न कि उन आयतों को जो उससे सम्बन्धित नहीं हैं। यह जानने के लिए कि बपतिस्मे पर पौलुस ने क्या शिक्षा दी रोमियों 6:3-7 या गलातियों 3:26, 27 में जाएं न कि रोमियों 2:28, 29 में। कई लोगों द्वारा

बपतिस्मे को नकारने के लिए 28, 29 आयतों का इस्तेमाल किया जाता है।

कई लोग पहले बताए गए ''लेख बनाम आत्मा'' के विचार से सम्बन्धित सामान्य तर्क का इस्तेमाल करते हैं। वे यह ज़ोर देते हैं कि बपतिस्मा ''व्यवस्था के लेख'' का भाग है इसलिए इस पर इतना ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। वे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि ''यदि व्यक्ति की आत्मा (हृदय) सही है, तो बपतिस्मा लेने या न लेने से कोई फर्क नहीं पड़ता।'' इस तर्क में समस्या यह है कि 28 और 29 आयतों में इस बात का संकेत तक नहीं है कि पौलुस ने कभी मन में ऐसा निष्कर्ष निकाला था। जैसा कि रोमियों 6 का अध्ययन करते हुए हम देखेंगे कि पौलुस ने सिखाया कि मनुष्य के छुटकारे के लिए बपतिस्मा परमेश्वर की योजना का महत्वपूर्ण भाग है।

अन्य हैं जो खतने और बपतिस्मे को मिलाने की कोशिश में और स्पष्ट तर्क का इस्तेमाल करते हैं। उनका तर्क कुछ इस प्रकार होता है:

- यहूदी बनाने का काम यहूदी परिवार में जन्म लेना पड़ता था। आठ दिन बाद खतना होना केवल *चिह्न* या मोहर होता था कि वह यहूदी है (देखें रोमियों 4:11)। इसलिए उसके परमेश्वर की संतान होने से खतने का कोई सम्बन्ध नहीं था।
- इसी प्रकार ''नया जन्म'' लेना है (यूहन्ना 3:3) जो कि उनके कहने के अनुसार ''केवल विश्वास से'' पाया जाता है और जिससे व्यक्ति परमेश्वर की संतान बनता है। बाद में बपतिस्मा लेना केवल एक चिह्न या मोहर है कि कोई परमेश्वर की संतान है। (कई लोग बपतिस्मे को ''भीतरी धोए जाने के बाहरी चिह्न'' के रूप में कहते हैं।) क्योंकि वे दावा करते हैं कि बपतिस्मे का परमेश्वर की संतान बनने से कोई सम्बन्ध नहीं है।

इस समीकरण में इतनी गलतियां हैं कि यह जान पाना कठिन है कि उन्हें सुलझाना आरम्भ कहां से किया जाए। बाइबल यह नहीं सिखाती कि नया जन्म ''केवल विश्वास'' से है। यीशु ने कहा कि ''जल और आत्मा से जन्म लेना'' आवश्यक है (यूहन्ना 3:5)। कलीसिया की आरम्भिक सदियों में, यह आम सहमति पाई जाती थी कि यूहन्ना 3:5 में ''जल'' का अर्थ जल से बपतिस्मा है। पतरस ने अपने पाठकों को बताया कि जब उन्होंने सच्चाई को *मान लिया* तो उन्हें ''नया जन्म'' मिला था (1 पतरस 1:22, 23)। इसके अलावा बाइबल कभी नहीं कहती कि बपतिस्मा ''चिह्न'' या ''मोहर'' है, जिसका उद्धार से कोई सम्बन्ध नहीं है। इसके विपरीत यीशु ने कहा, ''जो विश्वास करे *और* बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा'' (मरकुस 16:16)। पतरस ने कहा, ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले'' (प्रेरितों 2:38)।

परन्तु आइए बपतिस्मा और खतने के प्रयास पर ध्यान दें। बपतिस्मे और खतने के बीच समानता बनाने का कोई भी प्रयास तर्कविरुद्ध होगा, जो विसंगतियां पैदा कर सकता है। केवल यहूदियों का ही खतना होता था इसलिए क्या बपतिस्मा केवल यहूदियों का ही होना चाहिए? खतना केवल पुरुषों का होता था इसलिए क्या केवल नर बालकों का ही बपतिस्मा होना चाहिए? आम तौर पर बच्चों का खतना होता था इसलिए क्या बच्चों का बपतिस्मा होना चाहिए? (कई लोग खतना = बपतिस्मा तर्क का इस्तेमाल अपने कथित बच्चों के ''बपतिस्मे'' के लिए करने का प्रयास

करते हैं।)

जहां तक मुझे मालूम है बपतिस्मे के सम्बन्ध में बाइबल केवल एक आयत में खतने के रूपक का इस्तेमाल करती है। कुलुस्से की कलीसिया के नाम पौलुस ने लिखा:

> उसी [मसीह] में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है, जो हाथ से नहीं होता, अर्थात मसीह का खतना, जिस से शारीरिक देह उतार दी जाती है। और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे। और उसने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों, और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे, उसके साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया (कुलुस्सियों 2:11-13)।

इन आयतों में बपतिस्मा और आत्मिक खतने को मिलाया गया है, पर वे दोनों एक नहीं हैं। बपतिस्मा (जल में डुबकी) एक मानवीय गतिविधि है, जबकि आत्मिक खतना (जिसमें अपराधों की क्षमा शामिल है) एक ईश्वरीय गतिविधि है। आत्मिक खतना किसी के बपतिस्मा लेने के *परिणाम स्वरूप* उसके बपतिस्मा *लेने के समय* होता है, पर दोनों कार्य अलग-अलग हैं।

बपतिस्मे को कभी हमारे उद्धार या चिह्न या मोहर के रूप में नहीं बताया गया, परन्तु वास करने वाले आत्मा को बताया गया है। पौलुस ने बताया कि कुरिन्थुस के लोगों को परमेश्वर ''हम पर छाप भी कर दी है और बयाने में आत्मा को हमारे मनों में दिया'' (2 कुरिन्थियों 1:22)। इफिसुस के लोगों को उसने लिखा, ''उसी [मसीह] में तुम पर भी, जब तुम्हने सत्य का वचन सुना तो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है और जिस पर तुमने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी'' (इफिसियों 1:13, 14)। हम पर पवित्र आत्मा की ''मुहर'' लगाई जाती है जब हम प्रभु की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लेते हैं (प्रेरितों 2:38; देखें 5:32)। यदि मुझे उसमें सम्बन्ध बनाने का प्रयास करना हो जो किसी को यहूदी बनाता था और जो किसी को मसीह बनाता हो, तो यह इस प्रकार लेगा:

- यहूदी परिवार में जन्म यहूदी नर को यहूदी बनाता था। खतना इस बात का चिह्न या मोहर थी कि वह यहूदी है।
- नया जन्म (जिसमें जल में बपतिस्मा शामिल है; यूहन्ना 3:5) व्यक्ति को मसीही बनाता है। नया जन्म लेने पर उसे चिह्न या मोहर के लिए रूप में कि वह मसीही है (देखें रोमियों 8:9) पवित्र आत्मा दिया जाता है (प्रेरितों 2:38)।

बेशक समानांतर सम्पूर्ण नहीं। इस तथ्य कि अलावा कि खतना यहूदी नरों के लिए था, यह अन्तर है कि आम तौर पर शारीरिक खतना शारीरिक जन्म के आठ दिन के बाद होता था जबकि परमेश्वर हमें पवित्र आत्मा जल और आत्मा से जन्म लेने के समय देता है, न कि आठ दिनों बाद, तौभी दोनों के ढंगों में समानताएं हैं। यह देखने के लिए कि वचन क्या *नहीं* सिखाता हम में इस पगदण्डी पर काफ़ी समय लगा दिया है। मैं नहीं चाहूंगा कि आप यह भूल जाएं कि यह क्या *सिखाता* है। किसी यहूदी के लिए ''वास्तविक'' यहूदी बनने के लिए, शरीर में खतना होना ही

काफ़ी नहीं था, उसके हृदय का खतना होना भी आवश्यक था। उसका हृदय प्रभु पर लगा होना आवश्यक था; उसको समर्पित होना आवश्यक था। वैसे ही ''वास्तविक मसीही'' होने के लिए केवल बाहरी तौर पर ''सही'' होना ही आवश्यक नहीं, बल्कि हमें भीतरी तौर पर भी ''सही'' होना आवश्यक है।

मैं नये नियम की मसीहियत की बहाली की चुनौती के लिए समर्पित हूं। इस बहाली का एक पहलू बाहरी है कि हमें ''बाइबल की बातों को बाइबल के परिचय से करना'' आवश्यक है। इसके साथ ही मैं बाहरी पर ज़ोर देने और भीतरी की उपेक्षा करने के सदा बने रहने वाले खतरे से अवगत हूं। आखिर आत्मा को बहाल करने के बजाय पहली सदी के मसीहियत के रूपों को बहाल करना आसान है। इसलिए मैं फिर कहता हूं कि ''वास्तविक मसीही'' बनने के लिए हमें केवल बाहरी रूप से ''सही'' होना आवश्यक नहीं बल्कि भीतर से भी ''सही'' होना आवश्यक है!

सारांश

अपने पत्र के इस भाग में पौलुस के सम्पूर्ण उद्देश्य को समझने की चूक न करें। उसने जो कुछ भी कहा वह किसी न किसी तरह यहूदियों के पाप को दोषी ठहराने के लिए, उन्हें यीशु की आवश्यकता समझाने के लिए सोच समझकर ही कहा गया है। परमेश्वर की धार्मिकता के लिए यहूदियों की आवश्यकता के बारे में हमारे पास एक और पाठ है। रोमियों 3:1-8 में पौलुस ने उन कुछ आपत्तियों के उत्तर दिए जो यहूदी लोग उठा सकते थे।

अन्त में एक बार फिर ''जो सचमुच में यहूदी है, क्या वह खड़ा होगा?'' के प्रश्न पर एक बार फिर वापस आते हैं। इस बार मैं इसे ''जो वास्तविक *मसीही* है क्या वह खड़ा होगा?'' में बदलना चाहता हूं। यदि आप लोगों के समूह के सामने बैठे हैं जो आपको जानते हैं यानी जो आपको अन्दर बाहर से जानते हैं और आपसे यह प्रश्न पूछे तो क्या आप खड़े होंगे? क्या आप खड़े होने का साहस करेंगे? यदि आपको ''बाहरी आवश्यकता *या* भीतरी आवश्यकता'' है तो मैं आपसे आग्रह करता हूं कि उसे आज ही देख लें! मसीह के पास आएं कि वह आपके हर पाप को लहू से धो डाले (गलातियों 3:26, 27; रोमियों 6:3-7; कुलुस्सियों 1:14; 1 यूहन्ना 1:7, 9)!

टिप्पणियां

[1]AB में यह संकेत देते हुए कि यूनानी धर्मशास्त्र में यह शब्द नहीं है बल्कि इसे अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया जिन्हें लगा कि इसका संकेत इसमें है, ''real'' शब्द को कोष्ठकों में दिया गया है। [2]जॉन फासेट, ''द प्रिसीयस बुक डिवाइन'' *सॉंग्स ऑफ़ फेथ एण्ड प्रेज़,* कम्प. सं. व सम्पा. अल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)। [3]अमेरिका में मैं कह सकता हूं, ''कॉफ़ी टेबल पर बाइबल रखने से ही कुछ नहीं होगा।'' [4]सरल क्रिया temno नये नियम में नहीं मिलती; वह शब्द हमेशा उपसर्ग के साथ जुड़ा होता है। (डब्ल्यू. ई. वाइन, मेरिल एफ. अंगर एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* [नैशविल्ले: थॉमस नेलसन पब्लिशर्स, 1985], 143.)। [5]वाइन, 102. [6]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 97. [7]यहूदियों के लिए खतना इतना

महत्वपूर्ण था कि आरम्भिक कलीसिया में यह मुख्य मुद्दा बन गया। कई यहूदी मसीही इस मत पर ज़ोर देते थे कि अन्यजातियों का खतना होना चाहिए (देखें प्रेरितों 15:1)। [8]डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को, *मास्टरिंग द न्यू टैस्टामेंट: रोमन्स,* द कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़ (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 71 में उद्धृत। [9]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड्स गुड न्यूज फ़ॉर द वर्ल्ड,* द बाइबल स्पीक्स बुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1994), 92. [10]जॉन मैकआर्थर, *रोमन्स 1-8,* दि मैकआर्थर न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री (शिकागो: मूडी प्रैस, 1991), 160.

[11]यूनानी धर्मशास्त्र में यहां कोई निश्चित उप-पद नहीं है। आयत 25 से 29 में कई बार ''law'' शब्द के लिए एक निश्चित उप-पद पहले जोड़ा जाता है और कई बार नहीं। परन्तु आम तौर पर माना जाता है कि पौलुस के मन में मूसा की व्यवस्था थी। [12]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 140, n. 151. [13]वाइन, 340. [14]मौरिस, 140. [15]वाइन, 133. [16]स्टॉट, 93. [17]''शारीरिक'' के लिए *ek phuseos* (''स्वभाव से''; देखें KJV) है। खतना रहित अन्यजाति अपनी ''स्वाभाविक'' स्थिति में से (शारीरिक स्थिति जिसमें उनका जन्म हुआ था)। [18]मौरिस, 141 से लिया गया। [19]''व्यवस्था का लेख'' का अनुवाद एक ही यूनानी शब्द (*grammatos*) से किया गया है, जिसका अर्थ है ''वह जो लिखा गया है'' (*दि एलेनिटकल ग्रीक लेक्सिन* [लंदन: सेमुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1971], 82)। NIV, RSV और NKJV में "written code" है। संदर्भ संकेत देता है कि इस आयत में यह शब्द मूसा की लिखित व्यवस्था के लिए है। [20]जे.डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडलटन, *थिस्सलोनियंस, कोरिन्थियनंस, गलेशियनंस एण्ड रोमन्स* (सिनसिनाटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग, तिथि नहीं), 316.

[21]मोसेस ई. लार्ड, *कमैंट्री ऑन पॉल'स लैटर टू रोमन्स* (लेक्सिंगटन, कैंटकी: पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 97. [22]यहां ''शरीर'' का केवल ''शारीरिक'' है; परन्तु रोमियों की पुस्तक में इस शब्द का इस्तेमाल कई तरह से किया गया है, जैसा कि हम शृंखला में आगे संक्षिप्त शब्द अध्ययन में देखेंगे। [23]*Krupto* का बहुवचन रूप का अनुवाद रोमियों 2:16 में ''गुप्त'' बातें किया गया है। [24]*Pneuma* के कई अर्थ हो सकते हैं, परन्तु यहां इस शब्द का अर्थ है ''आत्मा।'' अगले एक पाठ में हम इस शब्द पर और विस्तार से चर्चा करेंगे। [25]बाद में रोमियों की पुस्तक में (विशेषकर अध्याय 8 में) पौलुस ने मसीही लोगों के जीवनों में पवित्र आत्मा के काम की बात की; पर अध्याय 2 में वह यहूदियों में परमेश्वर के काम की बात कर रहा था। [26]मौरिस, 142.[27]कई आयतें जो दिखाती हैं कि आज की कलीसिया ''आत्मिक इस्राएल'' है। 1 कुरिन्थियों 10:1 में पौलुस ने एक अन्यजाति मण्डली को जंगल में यहूदियों के बारे में लिखा और उन्हें ''*हमारे* बाप दादे'' कहा।